National Journal of Research and Innovative Practices (NJRIP)
Vol-5, Issue-11, 2020; ISSN No. : 2456-1355; Web: www.edusanchar.com

''कोटा विश्वविद्यालय से सम्बद्धता प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के सहायक आचार्यों की शिक्षण अभिक्षमता का प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन''

डॉ. श्रीकान्त भारतीय
एसोसिएट प्रोफेसर
जवाहर लाल नेहरू टी.टी. महाविद्यालय
सकतपुरा, कोटा

परमेश्वर गुप्ता
शोधार्थी,
केरियर पाइन्ट यूनिवर्सिटी, कोटा

Key word:– शिक्षण अभिक्षमता, प्रशिक्षणार्थी, शैक्षिक उपलब्धि, सहायक आचार्य।

सारांश –

प्रस्तुत शोध अध्ययन में कोटा विश्वविद्यालय से सम्बद्धता प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के सहायक आचार्यों की शिक्षण अभिक्षमता का प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है। अध्ययन हेतु शोधकर्ता ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया। प्रदत्तों के संकलन हेतु डा. आर.पी. सिंह और एस.एन. शर्मा द्वारा निर्मित मानकीकृत उपकरण (टी.ए.टी.बी.) का प्रयोग किया। न्यादर्श के रूप में हाड़ौती के 300 सहायक आचार्यों एवं 600 प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया, प्राप्त प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण करके निष्कर्ष निकाले गये इसमें माध्य, मानक विचलन, टी–परीक्षण एवं सहसम्बन्ध गुणांक ज्ञात किये गये। निष्कर्ष रूप में सहायक आचार्यों की शिक्षण अभिक्षमता का प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के साथ सार्थक धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया। सहायक आचार्यों की शिक्षण अभिक्षमता का स्तर औसत दर्जे का पाया गया।

1.1 प्रस्तावना –

उपनिषद् के अनुसार, सत्यं, ज्ञान, अनन्त, ब्रह्मा के द्वारा शिक्षा को आत्मज्ञान या बह्मज्ञान प्रदान करने की प्रक्रिया कहा जाता है। शिक्षा के ज्ञानार्जन द्वारा संस्कारों अथवा व्यवहारों का निर्माण करना है।''

शिक्षा एक त्रिमुखी प्रक्रिया है – शिक्षक, शिक्षा और विद्यार्थी। इस प्रक्रिया में शिक्षक का स्थान प्रमुख होता है। शिक्षक का कार्य मात्र शिक्षण–प्रशिक्षण संस्था तक ही सीमित नहीं होता अपितु वह नवीन समाज का निर्माणकर्ता और सृजनात्मकता से परिपूर्ण होता है।

शिक्षा व्यक्ति के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करती है। शिक्षा पर किया गया निवेश अनन्त काल में कई गुना फल प्रदान करता है। राष्ट्र के विकास का मूल आधार श्रेष्ठ शिक्षा पर अधिक निर्भर करता हैं बालकों के सर्वांगीण विकास में शिक्षक की महत्ती भूमिका होती है।

कोठारी शिक्षा आयोग के अनुसार, ''शिक्षा के गुणात्मक रूप से प्रभावित करने वाले सभी विभिन्न तत्वों में अध्यापक के गुण, कुशलता एवं चरित्र का महत्व निःसन्देह सर्वोपरी है।''

एक योग्य शिक्षक भौतिक साधनों के अभाव में भी विद्यार्थियों को उत्तम शिक्षा प्रदान कर सकता है। शिक्षक के शिक्षण कार्य को प्रभावित करने वाला एक प्रमुख कारक शिक्षक की शिक्षण अभिक्षमता है। शिक्षण अभिक्षमता का अर्थ शिक्षा में अभिक्षमता अर्थात् किसी व्यक्ति के प्रशिक्षण के उपरान्त उसके ज्ञान, दक्षता या प्रतिक्रियाओं को सीखने की योग्यता से है। शैक्षिक अभिक्षमता में विभिन्नता होने के कारण ही कोई व्यक्ति घास काटने की योग्यता रखता है, तो कोई प्राध्यापक या इंजीनियर या अन्य पेशे अपनाने की योग्यता रखता है।

बिंघम के अनुसार, ''अभिक्षमता किसी व्यक्ति के प्रशिक्षण के उपरान्त उसके ज्ञान, दक्षता या प्रतिक्रियाओं को सीखने की योग्यता है।''

शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के सहायक आचार्यो में कार्य संतुष्टि, शिक्षण अभिक्षमता, ज्ञान, दक्षता आदि सभी उज्ज्वल भविष्य की ओर संकेत करती है कि वह अपने व्यवसाय या पेशे में सफल हो सके। कार्य सन्तुष्टि व शैक्षिक अभिक्षमता के माध्यम से ही शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के सहायक आचार्यो को शैक्षिक उपलब्धियाँ प्राप्त होती है।

शैक्षिक उपलब्धि का अर्थ है ज्ञान प्राप्ति अथवा ज्ञान प्राप्त करना।

स्किनर के अनुसार, ''शैक्षिक कार्य का अंतिम परिणाम ही शैक्षिक उपलब्धि है जो विद्यार्थियों के सीखने के विषय में अंतिम जानकारी प्रदान करती है।'' प्रशिक्षणार्थी अपनी अन्तर्निहित शक्तियों के विकास के आधार पर ही उपलब्धि प्राप्त करता है। अतः शैक्षिक उपलब्धि पर सहायक आचार्यों की शिक्षण अभिक्षमता का प्रभाव देखने का प्रयास इस शोध अध्ययन में किया गया है।

1.2 शोध अध्ययन का औचित्य –

प्रस्तुत समस्या के संदर्भ में विभिन्न दृष्टिकोणों से औचित्य का विचार किया गया है।

1. **शिक्षकों की दृष्टि से** – शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत सहायक आचार्यों की यदि शिक्षण अभिक्षमता निम्न स्तर की है तो इसका सीधा प्रभाव प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ सकता है। अतः उन कारकों का पता लगाकर अपेक्षित सुधारात्मक सुझावों का प्रयोग करेंगे।
2. **प्रशासन की दृष्टि से –** शिक्षण अभिक्षमता की जानकारी प्रशासकों को भी लाभान्वित करेगी क्योंकि इससे वे अपने यहाँ कार्यरत सहायक आचार्यों की शिक्षण अभिक्षमता को जान सकेंगे एवं तत्पश्चात् इसकी अभिवृद्धि हेतु प्रयास करेंगे।
3. **प्रशिक्षणार्थियों की दृष्टि से –** सहायक आचार्यों की शिक्षण अभिक्षमता का प्रत्यक्ष सम्बन्ध प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि से होता है। अतः इस अध्ययन से प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की उन्नति हेतु भी प्रयास किया जा सकता है।

1.3 उद्देश्य –

1. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के सहायक आचार्यों की शिक्षण अभिक्षमता का अध्ययन करना।
2. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के पुरुष एवं महिला सहायक आचार्यों की शिक्षण अभिक्षमता का अध्ययन करना।
3. शहरी एवं ग्रामीण शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के सहायक आचार्यों की शिक्षण अभिक्षमता का अध्ययन करना।
4. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के पुरुष एवं महिला सहायक आचार्यों की शिक्षण अभिक्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. शहरी एवं ग्रामीण शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के सहायक आचार्यों की शिक्षण अभिक्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
6. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के सहायक आचार्यों की शिक्षण अभिक्षमता एवं प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों में सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।

1.4 परिकल्पनाएँ –

1. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के पुरुष एवं महिला सहायक आचार्यो की शिक्षण अभिक्षमता में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. शहरी एवं ग्रामीण शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के सहायक आचार्यों की शिक्षण अभिक्षमता में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
3. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के सहायक आचार्यों की शिक्षण अभिक्षमता एवं प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों में सार्थक सहसम्बन्ध होता है।

1.5 सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन –

1. **आर्या, सौरभ** (2006),
   ''ए स्टडी ऑफ टीचिंग एप्टीट्यूड एण्ड जॉब सेटिसफेक्शन ऑफ टीचर्स इन रिलेशन टू द एकेडमिक एचीवमेंट ऑफ देयर स्टूडेन्ट्स।''
2. **सिन्हा, रश्मि** (2007),
   "A Comparative Study of Academic Achievement, Motivation of Aided and Private Higher Secondary Students".
3. **द्विवेदी, संजय कुमार** (2008),
   ''माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि पर शैक्षिक उपलब्धि एवं शिक्षण अभिक्षमता के प्रभाव का अध्ययन।''
4. **Dr. Rachana Verma and Mohan** (2009),
   "A Study of Mathematics Achievement in Relation to Intelligence and Interest of Students of Secondary School".
5. **दुबे, भावेशचन्द्र** (2011),
   ''विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर शैक्षिक अभिप्रेरणा तथा समायोजन पर प्रभाव।''
6. **पाराशर, मित्तल** (2013),
   ''आगरा जनपद के ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन।''

7. **गोस्वामी, आभा** (2013),
''अनुदानित एवं स्व–वित्त पोषित बी.एड. के प्रशिक्षणार्थियों की बी.एड. परीक्षा में उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन।''

8. **सुरेखा वी. पाटिल और निशी उत्पल** (2013),
''कक्षा 10वीं के विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिक्षमता का उसके गणित में उपलबिध पर प्रभाव का अध्ययन।''

9. **सिंह, प्रेमपाल** (2017),
''माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध का अध्ययन।''

10. **अनुभव, बिसु** (2018),
"A Study of Teaching Aptitude Study habits and job Satisfaction of Secondary School teachers of Hanumangarh District".

11. **Devendiran, G.** (2018),
"Teaching aptitude of prospective secondary school teachers".

इसी प्रकार अदावत (1952), बनर्जी (1956), सिंह (1974), मूथा (1980) आदि ने भी शिक्षण अभिक्षमता से सम्बन्धित शोध कार्य किये। इन सभी शोध कार्यों के अध्ययन से पता चला कि कोटा विश्वविद्यालय से सम्बद्धता प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के सहायक आचार्यों की शिक्षण अभिक्षमता का प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन नहीं किया गया है अतः इसी नयी समस्या पर शोधकर्ता ने अध्ययन की आवश्यकता महसूस की।

1.6 शोध विधि –

शोधकर्ता द्वारा अपने शोधकार्य के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

1.7 जनसंख्या एवं न्यादर्श –

प्रस्तुत शोध अध्ययन में हाड़ौती क्षेत्र के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत सहायक आचार्यों का चयन किया गया है। कुल 300 सहायक आचार्यों का चयन किया जिनमें 150 पुरुष एवं 150 महिला सहायक आचार्य है तथा कुल 600 प्रशिक्षणार्थियों का चयन उनकी शैक्षिक उपलब्धि के लिए किया गया। शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों की संख्या 30 रखी गयी है।

1.8 उपकरण –

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए शोधकर्ता द्वारा निम्न उपकरणों का प्रयोग किया गया हैं –

1. शिक्षक अभिक्षमता परीक्षण (T.A.T.B.) मानकीकृत डॉ. आर.पी. सिंह तथा एस.एन. शर्मा।
2. शैक्षिक उपलब्धि के लिए बी.एड. प्रथम वर्ष परीक्षा–2019 का परीक्षा परिणाम।

1.9 सांख्यिकी –

प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्नलिखित सांख्यिकी का प्रयोग किया गया हैं –

1. मध्यमान
2. मानक विचलन
3. टी–परीक्षण
4. सहसम्बन्ध

1.10 परिसीमन –

1. हाड़ौती क्षेत्र के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र से शिक्षा महाविद्यालयों का चयन किया गया है।
2. प्रत्येक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय से कम से कम 10 सहायक आचार्यों का चयन किया गया है।
3. दो वर्ष से अधिक अनुभव वाले सहायक आचार्यों को ही शोध अध्ययन में सम्मिलित किया गया है।
4. एम.एड. शिक्षा शास्त्री, बी.एस.टी.सी. के महाविद्यालयों का चयन नहीं किया गया है।

1.11 परिभाषीकरण –

1. **शिक्षण अभिक्षमता –** यह एक गुण है जिसके आधार पर किसी पाठ्यक्रम या शिक्षण व्यवसाय में सफलता की भविष्यवाणी की जाती है।
2. **सहायक आचार्य –** शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में नियुक्त शिक्षक।
3. **शैक्षिक उपलब्धि –** शिक्षा के क्षेत्र में अर्जित ज्ञान, कौशल का सैद्धान्तिक आधार।
4. **प्रशिक्षणार्थी –** शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थी।

1.12 प्रदत्तों का विश्लेषण व व्याख्या –

1. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के पुरुष एवं महिला सहायक आचार्यों की शिक्षण अभिक्षमता में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

सारणी 1.1

क्र.स.	चर	सहायक आचार्य वर्ग	संख्या	माध्य	मानक विचलन	टी– मूल्य	सार्थकता स्तर
1.	शिक्षण अभिक्षमता	पुरुष	150	74.33	14.23	0.95	NS
2.		महिला	150	75.80	12.46		

df 298 के लिए 0.01 का मान = 2.59

df 298 के लिए 0.05 का मान = 1.97

तालिका से स्पष्ट है कि पुरुष सहायक आचार्यों की शिक्षण अभिक्षमता का माध्य 74.33 एवं महिला सहायक आचार्यों की शिक्षण अभिक्षमता का माध्य 75.80 प्राप्त हुआ इसी प्रकार इनका मानक विचलन क्रमशः 14.23 एवं 12.46 प्राप्त हुआ।

पुरुष एवं महिला सहायक आचार्यों की शिक्षण अभिक्षमता का टी मूल्य 0.95 प्राप्त हुआ जो कि 0.05 सार्थकता स्तर के सारणीयन टी मूल्य 1.97 से कम है।

अतः परिकल्पना 1 ''शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के पुरुष एवं महिला सहायक आचार्यों की शिक्षण अभिक्षमता में सार्थक अन्तर नहीं होता है।'' को स्वीकृत किया जाता है।

2. शहरी एवं ग्रामीण शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के सहायक आचार्यों की शिक्षण अभिक्षमता में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

सारणी 1.2

क्र.स.	चर	सहायक आचार्य वर्ग	संख्या	माध्य	मानक विचलन	टी– मूल्य	सार्थकता स्तर
1.	शिक्षण अभिक्षमता	शहरी	150	74.87	14.04	0.25	N.S.
2.		ग्रामीण	150	75.27	13.71		

df 298 के लिए 0.01 का मान = 2.59

df 298 के लिए 0.05 का मान = 1.97

तालिका से स्पष्ट है कि शहरी क्षेत्र के सहायक आचार्यों की शिक्षण अभिक्षमता का माध्य 74.87 एवं ग्रामीण क्षेत्र के सहायक आचार्यों की शिक्षण अभिक्षमता का माध्य 75.27 प्राप्त हुआ इसी प्रकार इनका मानक विचलन क्रमशः 14.04 एवं 13.71 प्राप्त हुआ।

शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के सहायक आचार्यों की शिक्षण अभिक्षमता का टी मूल्य 0.25 प्राप्त हुआ जो कि 0.05 सार्थकता स्तर के सारणीयन टी मूल्य 1.97 से कम है।

अतः परिकल्पना 2 ''शहरी एवं ग्रामीण शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के सहायक आचार्यों की शिक्षण अभिक्षमता में सार्थक अन्तर नहीं होता है।'' को स्वीकृत किया जाता है।

3. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के सहायक आचार्यों की शिक्षण अभिक्षमता एवं प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सहसम्बन्ध होता है।

सारणी 1.4

चर		सहसम्बन्ध गुणांक	सार्थकता स्तर
शिक्षण अभिक्षमता	शैक्षिक उपलब्धि	+0.429	0.01 S

df 298 के लिए 0.01 का मान = 0.148

df 298 के लिए 0.05 का मान = 0.112

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि सहायक आचार्यों की शिक्षण अभिक्षमता व प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक धनात्मक 0.429 प्राप्त हुआ जो कि 99% विश्वास स्तर df 298 सार्थकता स्तर 0.01 पर सारणीयन मूल्य 0.148 से बहुत अधिक है।

अतः परिकल्पना 3 ''शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के सहायक आचार्यों की शिक्षण अभिक्षमता एवं प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सहसम्बन्ध होता है।'' को स्वीकृत किया जाता है।

1.13 निष्कर्ष –

1. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के पुरुष एवं महिला सहायक आचार्यों की शिक्षण अभिक्षमता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।
2. शहरी एवं ग्रामीण शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के सहायक आचार्यों की शिक्षण अभिक्षमता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
3. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के सहायक आचार्यों की शिक्षण अभिक्षमता एवं प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया। सारांश रूप में सहायक आयार्चों की शिक्षण अभिक्षमता का प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के साथ सामान्य स्तरीय धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया है एवं शिक्षण अभिक्षमता का स्तर औसत दर्जे का प्राप्त हुआ है।

1.14 विवेचना –

शहरी एवं ग्रामीण शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के सहायक आचार्यों की शिक्षण अभिक्षमता के मध्यमानों में अधिक अन्तर नहीं है इसका स्तर औसत दर्जे का पाया गया है क्योंकि इस क्षेत्र में शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों को उच्च गुणवत्ता पूर्ण बनाने के लिए आधारभूत संसाधनों का अभाव है। बी.एड. प्रवेश परीक्षाओं में पहले जैसी प्रतिस्पर्धा नहीं रही। यही कारण है कि प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि सहायक आचार्यो की शिक्षण अभिक्षमता से प्रभावित होती है। उच्च शिक्षण अभिक्षमता होने पर ही उच्च शैक्षिक उपलब्धि की प्राप्ति की जा सकती है। महिला एवं पुरुष सहायक आचार्यों की मानसिक योग्य का स्तर भी कम प्राप्त हुआ।

1.15 शैक्षिक निहितार्थ –

1. प्रबन्धन वर्ग को सहायक आचार्यों की शिक्षण अभिक्षमता में वृद्धि का प्रयास करना चाहिए।
2. सहायक आचार्यों को भी अपने ज्ञान, कौशल एवं तर्कशक्ति, मानसिक योग्यता के विकास हेतु निरन्तर प्रयास करना चाहिए।
3. सहायक आचार्यों को अपने मनोवैज्ञानिक स्तर में वृद्धि करते हुए अधिक से अधिक प्रशिक्षणार्थियों को लाभान्वित करना चाहिए ताकि उनकी शैक्षिक उपलब्धि में गुणात्मक वृद्धि हो सके।
4. प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को ध्यान में रखकर सहायक आचार्य अपनी शिक्षण योजनाओं की तैयारी कर सकेंगे।

1.16 सुझाव –

1. यह अध्ययन सम्पूर्ण राजस्थान के शिक्षा महाविद्यालयों पर किया जा सकता है।
2. राजकीय महाविद्यालय के शिक्षकों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनकी शिक्षण अभिक्षमता के प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है।
3. विश्वविद्यालय के कला संकाय, विज्ञान संकाय के सहायक आचार्यो की शिक्षण अभिक्षमता का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
4. माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की शिक्षण अभिक्षमता और उनकी शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन किया जा सकता है।
5. प्राथमिक स्तर पर सरकारी एवं निजी अध्यापकों की शिक्षण अभिक्षमता का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

1.17. संदर्भ ग्रंथ सूची –

1. भटनागर, सुरेश, जोशी, सुरेश (2003), शिक्षण अधिगम का मनोविज्ञान, सूर्या प्रकाशन, मेरठ।
2. माथुर, एस.एस. (2012), शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
3. राय, पारसनाथ (2013), अनुसंधान परिचय, अग्रवाल पब्लिशर्स, आगरा।
4. गैरेट, हेनरी ई. (2014), ''शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग।'' कल्याणी पब्लिशर्स, नई दिल्ली
5. Agrwal, J.C. (2005), Essentials of Educational Psychology, New Delhi, Vikas Publishing House, pvt. Ltd.
6. शर्मा, आर. ए. (2003), शिक्षा और मनोविज्ञान में प्रारम्भिक सांख्यिकी, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।

Journals -

1. Deva, Anjali (2007), The international Journal of Indian Psychology volume-3, issue-1 Oct-Dec. 2015.
2. डॉ. प्रमिला सिंह (2017), International Journal of Academic Research and Development volume-2, issue-4 July-2017
3. डॉ. मनीषा पाराशर और डॉ. अमित मित्तल (2013), भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका वर्ष–32, अंक–2 जुलाई–दिसम्बर, 2013
4. दुबे, भावेश चन्द्र (2011), भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका वर्ष–31, अंक–3, जनवरी–2011
5. सिंह प्रेमपाल (2017), जर्नल ऑफ सोशियो एज्युकेशन एण्ड कल्चरल रिसर्च, वोल्यूम 3(7), जुलाई–दिसम्बर–2017 पेज – 93–96
6. गोस्वामी, आभा (2013), भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, वर्ष–32, अंक–1, जनवरी–जून–2013
7. श्रीवास्तव, सुहासिनी (2009), भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, वर्ष–28, अंक–2 जुलाई–दिसम्बर–2009
8. सुरेखा वी. पाटिल और निशी उत्पल (2013), Journal of Educational & Psychological Research Vol.-4, No-1, Jan- 2014

Surveys -

- Buch, M.B., Third Survey of Research in Education (1978-1983) New Delhi, NCERT, 1987

Weblography -

- www.shodhganga.com
- www.echetana.com
- www.dissertation.com
- www.teachereducation.com
- https://edusanchar.com
- www.irjmsh.com
- www.academicsjournal.com